02 मार्च 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 19
फरवरी(द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में स्थित -

पंचतीर्थ जिनालय का 10वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ 25 से 27 फरवरी 2022 तक पण्डित टोडरमल स्मारक के तत्त्वावधान में त्रि-दिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन अनेक आयामों सहित सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर • अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के लाइव प्रवचन • श्री प्रवचनसार मण्डल विधान एवं युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा विधान का विशेष स्पष्टीकरण • 2012 में सम्पन्न भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की मधुर स्मृतियों का वीडियो क्लिप के माध्यम से पुनरावलोकन • श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'सामान्य से विशिष्ट तक' कार्यक्रम में महाविद्यालय के स्नातकों से प्रेरणास्पद संवाद • पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रवचनसार विषय पर मार्मिक व्याख्यान • महाविद्यालय के स्नातकों एवं वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा गोष्ठी के माध्यम से प्रवचनसार विषय पर गहन चर्चा • बहुचर्चित कृति 'भरत का अंतर्द्वंद' का संगीतमय लोकार्पण एवं प्रसिद्ध गायक गौरव सोगानी एवं दीपशिखा सोगानी द्वारा उनकी लाइव प्रस्तुति • अपार उत्साह के साथ पण्डित टोडरमल स्मारक के परिसर में श्रीजी की भव्य शोभायात्र व पंचतीर्थ जिनालय स्थित मनोहर जिनबिम्बों का महामस्तकाभिषेक इसप्रकार अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। महोत्सव की विस्तृत जानकारी आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

एक और उपलब्धि डॉ. बंसल के नाम

दिल्ली : यहाँ 20 फरवरी 2022 को समन्वय वाणी (पाक्षिक) के सम्पादक एवं अखिल भा. जैन पत्र सम्पादक संघ, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अखिलजी बंसल, जयपुर को श्री कुन्दकुन्द भारती न्यास दिल्ली की ओर से आचार्य विद्यानंद पुरस्कार से पुरस्कृत एवं 1,11,000 की राशि से सम्मानित करते हुए '**जैनधर्म विशारद**' की उपाधि प्रदान की।

ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सतीशजी जैन की ओर से प्रदत्त राशि के साथ महामंत्री श्री अनिलजी जैन नेपाल ने प्रशास्ति पत्र भेंट की।

इस अवसर पर समारोह में उपस्थित वरिष्ठ महानुभावों ने भी डॉ. बंसलजी की पत्रकारिता तथा साहित्यिक अवदान की प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस उपलक्ष्य में 23 फरवरी को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यालय परिवार द्वारा आपका एवं आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शैलजी बंसल का सम्मान किया गया

टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर ने हिंदी विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्ण करके जे.आर.एफ. प्राप्त की।

पण्डित नयनजी शास्त्री बरायठा ने संस्कृत विषय से नेट की परीक्षा उत्तीर्ण करके जे.आर.एफ प्राप्त की। ज्ञात है कि संस्कृत विषय में प्रथम प्रयास में ही जे. आर.एफ लेने वाले आप प्रथम स्नातक हैं। जैन पथ-प्रदर्शक परिवार आप दोनों के उज्जवल भाविष्य की भावना भाता है।

श्री टोडरमल स्मारक भवन के संस्थापक -

श्री पूरणचन्दजी गोदिका

'समर्पण' द्वारा मुमुक्षु समाज के वरिष्ठ विद्वानों व श्रेष्ठियों के व्यक्तित्व से वर्तमान पीढ़ी को परिचित कराने के लिए 27 फरवरी 2022 को श्री टोडरमल स्मारक भवन के संस्थापक स्व. श्री पूरणचन्दजी गोदिका के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया, जिसमें श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व श्री विनयचंदजी पापड़ीवाल उपस्थित रहे। जिसका संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने किया।

(32) सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

अब यहाँ केवल निश्चयाभास के अवलम्बी जीवों की प्रवृत्ति बतलाते हैं। जो जीव एकान्त में बैठकर ध्यान मुद्रा धारण करते हैं, कर्मोपाधि से रहित स्वयं को सिद्ध-समान शुद्ध समझकर संतुष्ट होते हैं, बैठे-बैठे स्वयं को ज्ञानी समझते हैं - उनका निषेध किया है।

कई जीव ऐसा मानते हैं कि ज्ञानी जीव के आस्रव-बंध नहीं होता। इसप्रकार बंध के भय से रहित होते हुए स्वच्छन्द रागादिरूप प्रवृत्ति करते हैं। इसतरह जो जीव भरत चक्रवर्ती आदि महापुरुषों की आड़ में अपने विषय-कषाय का पोषण करते हैं। उनसे कहते हैं कि ज्ञानी जीव के मोह के उदय से रागादि तो होते हैं; परन्तु वे बुद्धिपूर्वक नहीं होते। सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीवों के श्रद्धान और बाह्य आचरण में कैसा समन्वय होता है? भरतादि की विषयों की प्रवृत्ति कैसी होती होगी? इसका चित्रण पण्डितजी आगे करने वाले थे, उनके हृदय में जो बात चल रही थी, वह उन्हीं के साथ चली गई।

आगे पण्डितजी लिखते हैं कि रागादि भावों को अत्यन्त बुरे एवं अहितकारी जानकर उनके नाश का उपाय करना। वहाँ सर्वप्रथम तीव्रराग को छोड़ने के लिए अशुभ को छोड़कर शुभ में लगना और फिर मंदराग को छोड़ने के लिए शुभ को छोड़कर शुद्ध में लगना - यही वास्तविक क्रम है।

जो लोग अशुभ को क्लेश मानकर व्यापारादि नहीं करते और शुभ को हेय जानकर शास्त्राभ्यासादि भी नहीं करते तथा शुद्धोपयोग उन्हें हुआ नहीं है। अत: न तो वे व्यापार करते हैं और न ही धर्म-साधन। उनकी दशा का चित्रण करते हुए पण्डित ने लिखा कि ये लोग खीर-शक्कर खाए हुए आलसी पुरुष की भाँति या वृक्ष की तरह निरूद्यमी होकर काल व्यतीत करते हैं। यदि वह कहे कि इन कार्यों को छोड़कर आत्मचिंतन करता हूँ तो उसे कहते हैं कि छद्मस्थ का उपयोग अधिक समय तक एकरूप नहीं रहता। जब गणधरादि का उपयोग भी अधिक समय तक एक स्थान पर नहीं लगता तो तेरा कैसे लगेगा?

इसप्रकार जो जीव निश्चयाभास के अवलम्बी हैं, उन्हें मिथ्यादृष्टि जानना तथा जैसे वेदान्त व सांख्य मतावलम्बी आत्मा को शुद्ध मानते हैं। वैसे ही यह भी आत्मा को शुद्ध समझते हैं।

कई लोगों को ऐसा श्रद्धान है कि परद्रव्यों के चिन्तन से आस्रव-बंध होता है। उनसे कहते हैं कि यदि परद्रव्य को जानने से आस्रव-बंध होता तो केवली तो समस्त परद्रव्य को जानते हैं। यदि वे कहें कि छद्मस्थ को आस्रव-बंध होता है, तो ऐसा भी नहीं बनता; क्योंकि शुक्लध्यान में भी मुनिराजों को छह-द्रव्यों के द्रव्य-गुण-पर्याय का चिंतन होता ही है। अवधि व मन:पर्ययज्ञान तो परद्रव्य को ही विषय बनाते हैं। वास्तव में परद्रव्य का चिन्तन बंध का कारण नहीं है; अपितु परद्रव्य से हुआ जुड़ान बंध का कारण है।

यहाँ कोई कहे कि निर्विकल्प अनुभवदशा में नय-प्रमाण के विकल्पों का निषेध क्यों किया? उसे कहते हैं कि जो जीव इन्हीं विकल्पों में उलझे रहते हैं, आत्मा का अनुभव नहीं करते, उनके लिए ऐसा उपदेश है। वीतरागभाव सहित स्वद्रव्य व परद्रव्य का सामान्य व विशेषरूप जाना होता है, उसी का नाम तो निर्विकल्प दशा है। यहाँ वीतरागभाव सहित जानने को ही निर्विकल्पदशा कहकर पुकारा गया है।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि बहुत विकल्प होने पर भी निर्विकल्प संज्ञा कैसे हुई? तो कहते हैं कि निर्विचार होने का नाम निर्विकल्प दशा नहीं है। विचार ज्ञान गुण की पर्याय है और विकल्प चारित्र गुण की विकारी पर्याय है। ज्ञान गुण की पर्याय तो सदा काल चलती ही रहती है; अत: यह जीव निर्विचार तो कभी होता ही नहीं। रागादि विकल्पों से ऊपर उठने का नाम ही निर्विकल्प दशा है।

स्वद्रव्य के विशेष व परद्रव्य को जानने का नाम विकल्प नहीं है; अपितु राग-द्वेषवश किसी ज्ञेय को जानने में उपयोग लगाना व किसी को जानने से उपयोग छुड़ाना - इसप्रकार बारम्बार उपयोग को भ्रमाने का नाम विकल्प है और अन्य को जानने के अर्थ उपयोग को न भ्रमाने का नाम निर्विकल्प है। यहाँ कोई कहे कि छद्मस्थ का उपयोग तो नाना ज्ञेयों में भ्रमता ही है तो उसे कहते हैं कि जितने काल तक एकरूप जानना रहे तब-तक निर्विकल्प दशा जानना। सिद्धांत में ध्यान का ऐसा ही लक्षण कहा है -

एकाग्रचिन्तानिरोधोध्यानम् अर्थात् एक का मुख्य चिन्तन हो और अन्य का चिन्तन रुक जाए - इसी का नाम ध्यान है।

यदि कोई कहे कि शास्त्रों में तो परद्रव्य से छुड़ाकर स्वरूप में उपयोग लगाने का उपदेश दिया है तो उससे कहते हैं कि 'परद्रव्यों में उपयोग लगाने से जिनको राग-द्वेष हो जाते हैं और स्वरूप चिंतन करें तो जिनके राग-द्वेष घट जाते हैं' - ऐसी निचली अवस्थावालों के लिए यह उपदेश है।

बहुत क्या कहें - जिसप्रकार से रागादि मिटाने का श्रद्धान हो वही श्रद्धान सम्यग्दर्शन है, जिसप्रकार से रागादि मिटाने का जानना हो वही जानना सम्यग्ज्ञान है तथा जिसप्रकार से रागादि मिटें वही आचरण सम्यक्चारित्र है; ऐसा ही मोक्षमार्ग मानना योग्य है।

पण्डित बनारसीदासजी के जीवन से प्राप्त विविध प्रकार की शिक्षाएँ

विविध संघर्षों से भरा हुआ था, जिनका संपूर्ण जीवन
जीवन में नित्य आगे बढ़ते हुए, सत्यपंथ पाने की थीं आशाएँ,
जीवन संकटों से लड़ते रहे जो, हार न मानी जिन्होंने पल एक
समता भाव को बना अपना मित्र, पार करते रहे सर्व जीवन बाधाएँ।

हमारी यह वसुंधरा अनेक महापुरुषों के सुकृत्यों से सदा ही पवित्रता को प्राप्त होती रही है। महापुरुषों के जीवन भले ही अनेक संकटों व विपत्तियों से परिपूर्ण रहे हों; लेकिन उन्होंने हार न मानकर अपने समय की विविध स्थितियों का सामना करते हुए स्वयं को आगे बढ़ाकर सर्वसमाज के लिए न केवल तत्कालीन स्थितियों में; अपितु आगे आने वाली पीढ़ियों को भी अपने जीवन के माध्यम से प्रेरित किया।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है –

खम ठोक जब ठेलता है नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़ है
विघ्न कौन सा ऐसा जग में, जो टिक सके मानव के मग में
मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।

विक्रम संवत् १६४३ में आज से ठीक ४३६ साल पहले जौनपुर, उत्तर प्रदेश में जन्मे पण्डित बनारसीदासजी का जीवन अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव से भरा रहा। कई तूफान उनके जीवन में आए और फिर समाप्त हो गए, कई शारीरिक कष्टों ने उन्हें घेरा; लेकिन समताभाव के कारण उन सब से पण्डित बनारसीदासजी ने अपने आपको उबारा या ऐसा कहें कि पुण्य के उदय में समस्त परिस्थितियाँ अनुकूलता को प्राप्त हो गईं।

पण्डित बनारसीदासजी के जीवन से हम सभी को ऐसी अनेक प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं, जो हमारे जीवन को एक सही दिशा प्रदान कर सकती हैं। पण्डित बनारसीदासजी के परिवार में तीन पीढ़ियों से व्यापार ही होता आ रहा था; लेकिन पण्डित बनारसीदासजी को उनके द्वारा डाले हुए हर व्यापार में विफलता ही प्राप्त हुई। पण्डितजी ने हिम्मत नहीं हारी निरन्तर कुछ न कुछ करते रहे और जीवन के अंतिम दिनों में जाकर आर्थिक परिस्थितियाँ उनके अनुकूल हो गईं। अतः हमें जीवन में सदा ही हिम्मत और जज़्बे से काम लेना चाहिए।

पण्डित बनारसीदासजी के तीन विवाह हुए, ९ संतानें हुईं; लेकिन इनमें से कोई भी जीवित नहीं रहा, उपचारगत अनुकूलताएँ न होने के कारण परिवार के सभी सदस्य समय से पहले ही चल बसे, इसी तरह पण्डितजी कुष्ठ रोग से ग्रसित हो गए, चोर, डकैत लुटेरों ने कई बार लूटा, कई बार तंत्र–मंत्र के चक्कर में पड़े, आशिकी करने का रोग लगा; लेकिन इन सबके मध्य अपने ही पापोदय की तीव्रता समझ कर समताभाव को धारण व धैर्य धारण करके जिंदगी में फिर उठ खड़े हुए और स्वयं को अध्यात्म मार्ग से जोड़ लिया। यहाँ हम सभी को यही सीख मिलती है कि पाप के उदय में स्वयं को धर्म से जोड़कर समता भाव बनाए रखना चाहिए।

पण्डित बनारसीदासजी के जीवन में अहंकार भाव रंचमात्र नहीं था, पण्डितजी की प्रसिद्धि जानकर कई व्यापारी आगरा आते और पण्डितजी के मुख से अध्यात्म की चार बातें अवश्य सुनकर जाते। इसीप्रकार रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदासजी ने जब पंडितजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो बड़े ही सहज भाव से उनसे मुलाकात की और अपनी ओर से एक अध्यात्म रामायण का प्रतीकात्मक रूप लिखकर तुलसीदास जी को दिया। इससे पता चलता है कि पण्डितजी का संपूर्ण जीवन सहजता, सरलता, विनम्रता व आत्मीय भाव से भरा हुआ था।

पण्डित बनारसीदासजी को अरथमलजी ढोर का संयोग मिलने पर पांडे राजमलजी कृत समयसार कलश टीका पढ़ने व रूपचंदजी पांडे के प्रवचनों को सुनकर स्वयं को दिगम्बरत्व से जोड़ने का कार्य किया। इससे हमें यही शिक्षा मिलती है कि जब गुणीजन का समागम मिले तो स्वयं को परिवर्तित करके एक नयी सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

पण्डित बनारसीदासजी के जीवन से विशेष यह शिक्षा भी मिलती है कि अपने जीवन की बुराइयों का पता चलने पर हमें उनसे तुरन्त अलग होकर एक नये मार्ग को अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए। जैसे पण्डितजी पहले भले ही अंधविश्वासों में डूबे थे, आशिकी के रोग के कारण शृंगारपरक कविताएँ करने लगे थे, धर्म के मार्ग में भी स्वच्छंदी हो गए थे; लेकिन वास्तविकता का पता चलने पर समस्त बुराइयों से स्वयं को तुरंत अलग कर लिया।

पण्डितजी के जीवन से एक शिक्षा यह भी मिलती है कि हमें रचनाशील प्रवृत्ति वाला और अपने जीवन–यथार्थ को शब्दशः रखने वाला बनना चाहिए; क्योंकि पण्डित बनारसीदासजी ने अर्द्ध–कथानक नामक अपनी आत्मकथात्मक कृति में अपने जीवन के सत्य को उद्घाटित किया है, उसमें उन्होंने अपने जीवन की बुराइयों को छिपाने का रंचमात्र प्रयास नहीं किया।

दिग्भ्रमित रहे थे जो प्रारंभ में, नहीं था वस्तुतत्व– विचार जिन्हें,
व्यापार में मिली केवल विफलता, लुटेरों ने लूटा रास्तों में कई बार उन्हें।
मिला फिर इन्हें समागम गुणीजन का हुआ जीवन में तब ज्ञान सूर्य का उदय,
जोड़ लिया स्वयं को स्वाध्याय से,तिरोहित हुआ फिर इनका पापोदय।

– अनिल जैन 'अंकुर'

वेदी एवं शिखर शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न

जबलपुर : यहाँ 11 फरवरी 2022 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा उपनगर करमेता में श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर का वेदी एवं शिखर शिलान्यास महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम ध्वजारोहण श्री सत्येन्द्रजी परिवार शहपुरा एवं शिलान्यास श्री बाबूलालजी रूपाली परिवार, श्री सुनीलजी पायलवाला परिवार, श्री अशोकजी दिगम्बर परिवार, श्री विमलजी अखिलेशजी परिवार, श्री संजयजी ग्रीनवैली परिवार, श्री विमलजी सुलभजी परिवार ने किया।

कार्यक्रम में प्रातः जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचन का लाभ मिला।श्री मुकेशजी जैन करेली की अध्यक्षता एवं पण्डित रतनचंदजी जैन पथरिया व पण्डित श्री कमलजी जबेरा के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित शिलान्यास सभा में श्री संजयजी जैन ने जिनमंदिर की रूपरेखा प्रस्तुत की साथ ही पण्डित अनुभवजी करेली, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, श्री मनोजजी ताम्रकार के प्रासंगिक उद्गारों का लाभ प्राप्त हुआ। संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री एवं विधि–विधान के कार्य डॉ. मनोजकुमारजी, ब्र. श्रेणिकजी, पण्डित अभिनयजी एवं श्री अनुभवजी जबलपुर ने किए।

श्री भक्तामर महामण्डल विधान सम्पन्न

अलवर : यहाँ 20 फरवरी 2022 को श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री 1008 रत्नत्रय दिगम्बर जैन मंदिर के 16वें स्थापना दिवस के अवसर पर श्री भक्तामर महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रातःकाल जिनेन्द्र प्रक्षाल, नित्य–नियम पूजन व पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के शुद्धोपयोग का स्वरूप विषय पर मार्मिक प्रवचन के उपरान्त श्री भक्तामर महामण्डल विधान पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

स्थानीय विद्वानों में पण्डित अजितजी शास्त्री, पण्डित सुभाषजी शास्त्री एवं पण्डित राजीवजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो–वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

दीक्षान्त समारोह सानन्द सम्पन्न

नागपुर : यहाँ श्री महावीर विद्या निकेतन की कक्षा 10वीं के छात्रों का दीक्षान्त समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ।

यह समारोह अध्यक्ष श्री प्रभातजी धाड़ीवाल, विशिष्ट अतिथि श्री रोहितजी शर्मा, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, डॉ. सुरेशजी जैन के अतिरिक्त मंदिर के अध्यक्ष श्री जयकुमारजी देवड़िया, मंत्री श्री अशोककुमारजी जैन व श्री प्रियदर्शनजी तथा डॉ. विवेकजी जैन छिंदवाड़ा, पंडित श्रृतेशजी शास्त्री, पंडित रविन्द्रजी शास्त्री, पंडित श्रेणिकजी, पंडित शुभमजी शास्त्री, पंडित श्रीशांतजी शास्त्री नागपुर आदि की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

मंगलाचरण शिवानी जैन ने एवं संचालन पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित विनितजी शास्त्री एवं पण्डित मोहितजी शास्त्री ने अपने चिरपरिचित अंदाज में किया तथा श्री नरेशजी जैन ने विद्या निकेतन की उपलब्धियों से परिचित कराया। नागपुर से डॉ. राकेशजी शास्त्री, श्री विपिनजी शास्त्री, श्री सुमतजी लल्ला, डॉ. सुरेशजी जैन ने छात्रों को भविष्यकालीन लक्ष्य के लिए शुभकामनाएँ एवं सदैव जैनधर्म के प्रति समर्पित रहने की प्रतिज्ञा दिलाई।

विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में वीरार्थी प्रांजल जैन शहपुरा एवं अभिनन्दन जैन चंद्रपुर ने आपने 3 साल की मधुर स्मृतियों को सांझा किया। सभी दीक्षार्थी छात्रों को सर्टिफिकेट एवं उपहारों से सम्मानित किया गया। श्री विशालजी मोदी ने विद्यार्थियों के माता–पिता का आभार व्यक्त किया।

समयसार महामण्डल विधान सम्पन्न

कोलारस : यहाँ 11 से 16 फरवरी 2022 तक कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत श्री आदिनाथ जिनालय के २३वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में श्री समयसार महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। विधि–विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना एवं विधानाचार्य श्री समकितजी शास्त्री सागर के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

दैनिक कार्यक्रम में प्रातःकाल जिनेन्द्र प्रक्षाल, श्री समयसार महामण्डल विधान के पश्चात् आचार्य कुन्दकुन्द और उनकी समकालीन परिस्थितियों पर डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ के प्रवचन एवं रात्रि में जिनेन्द्र–भक्ति व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त प्रथम प्रवचन बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना व द्वितीय प्रवचन पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा का नाटक समयसार विषय पर का रहा। साथ ही प्रतिदिन अनेक रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

मानुष भव यों ही खो गया

मेरी किश्ती गैर ने न डुबाई, मेरी किश्ती[1] मैंने ही तो डुबाई किश्ती मझधार[2] में नहीं डूबी, खेद है, ये किनारे[3] पर डूबी। बहता पानी[4] खेत में आ गया, मैं पाली[5] करके रोक न पाया पकी–पकाई फसल[6] सड़ गई[7], थोड़ी–सी लापरवाही[8] खा गई।

दुर्लभ मनुष्य भव पाया, व्यर्थ प्रपंचों में उलझाया चित्तवृत्ति को व्यर्थ भ्रमाया, इसको मैं समेट न पाया। दुनिया को समझ न पाया, अपमान के घूंट पी न पाया रोजी–रोटी में उलझ गया, बाल–बच्चों में मचल गया।

मैं स्वयं को समझ न पाया, पर को क्या मैं समझा पाया? विरागी का सपना संजोया, पर रागी ही मैं रह गया। सोने में समय चला गया, देह धर्म में उलझ गया आत्मधर्म विस्मृत हो गया, मानुष भव यों ही खो गया।

शब्दार्थ – १. किश्ती– मनुष्यभव, २. मझधार–प्रतिकूल परिस्थितियाँ, ३. किनारे– अनुकूल अवसर, ४. बहता पानी– इन्द्रियों के विषयभोग ५. पाली– संकल्प, ६. पकी–पकाई फसल– मनुष्य भव में जैन कुल मिलना, ७. सड़ गई– खराब करना, ८. थोड़ी–सी लापरवाही– आत्मानुभव का पुरुषार्थ न करना। **– डॉ. महावीर प्रसाद जैन**

वार्षिक महोत्सव सानन्द सम्पन्न

कोटा : यहाँ 10 फरवरी 2022 को श्री दिगम्बर जैन महावीर चैत्यालय रामपुरा में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की द्वितीय वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा व सहयोगी पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा तथा पण्डित नीतेशजी कासलीवाल रहे।

कार्यक्रम में प्रात:काल जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं श्री महावीर पंचकल्याण विधान के पश्चात् सुखी जीवन का मंत्र विषय पर पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के व्याख्यान का लाभ मिला।

हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के 21वें बैच के स्नातक **डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़** (म.प्र.) को प्राकृत–अपभ्रंश एवं जैनागम विषय में आचार्य (M.A.) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने हेतु जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह में '**गोल्ड मैडल**' से सम्मानित किया गया; एतदर्थ जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह्यूस्टन (अमेरिका) की ओर से –

विशेष व्याख्यान

जैन सोसाइटी ऑफ ह्यूस्टन द्वारा 20 एवं 21 फरवरी 2022 को द्वि–दिवसीय विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर विशेष रूप से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा 20 फरवरी को निमित्त–उपादान एवं 21 फरवरी को आत्मा–परमात्मा विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुए एवं उपस्थित श्रोताओं की विषयगत शंकाओं का समाधान भी किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम जैन सोसाइटी ऑफ ह्यूस्टन के प्रमुख विनयभाई शाह के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री नितिनभाई, श्री कल्पेशभाई एवं श्री चेतलभाई का विशेष सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि जैन अकेडमी ऑफ नार्थ अमेरिका के प्रमुख श्री अतुलभाई खारा द्वारा जुलाई माह में लगने वाले JANNA शिविर की घोषणा भी की गई।

28वाँ वार्षिक महोत्सव सानन्द सम्पन्न

छिंदवाड़ा : यहाँ अहिंसास्थली गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनालय का दो–दिवसीय 28वाँ वार्षिक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। महोत्सव का शुभारम्भ प्रातःकाल मंगल कलश शोभायात्रा से हुआ। ध्वजारोहण के पश्चात् श्रीजी का प्रक्षाल, मंगल कलश स्थापना एवं श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान सम्पन्न हुआ। समारोह में मुम्बई से पधारे ब्र. निखिलभैया मुम्बई के व्याख्यानों का लाभ मिला।

वैराग्य समाचार

1) भोपाल निवासी **श्रीमती मालतीजी सिंघई** धर्मपत्नी श्रीमान उमरेशकुमारजी सिंघई (वकील साहब) का 15 फरवरी 2022 को तत्त्वाभ्यास के फल स्वरूप अत्यन्त शांत परिणामों से जिनवचन सुनते हुए, ब्रह्मचारी बहनों के सान्निध्य में देह परिवर्तन हो गया। ज्ञातव्य है कि आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैन पथप्रदर्शक के लिए 2100 रुपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

2) गुना निवासी धर्मानुरागिणी **श्रीमती अंगूरीबाई बांझल** का 9 फरवरी 2022 को प्रातःकाल शांत परिणामों सहित देहावसान हो गया है। विदित है कि आप तत्त्वप्रेमी साधर्मी महिला थीं एवं स्व. श्री बाबूलालजी बांझल की धर्मपत्नी थीं।

3) उदयपुर निवासी **श्री एस. एम. जी जैन** की स्मृति में श्रीमती ललिताजी उदयपुर द्वारा 500 रूपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों– यही कामना है।

द्वितीय शतक : रोला शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

एकत्व–विभक्त आत्मा

यह प्रयत्न से साध्य नहीं है सहज साध्य यह।
सहज साध्य ही इसे कहा है जिनशासन में।।
आगे भी तो सहज भाव में ही रहना है।
यहाँ यत्न की आकुलता में क्यों रहते हो?।। ५३।।

आकुलता का मार्ग नहीं है जिनशासन यह।
इसमें आकर भी क्यों तुम व्याकुल होते हो?।।
व्याकुलता से बचने को इसमें आये हो।
फिर भी क्यों इतने भारी व्याकुल होते हो?।।५४।।

मुक्ति में तो अनन्तकाल तक सहज रहोगे।
मुक्तिमार्ग में भी तुम क्यों व्याकुल होते हो?।।
आकुलता–व्याकुलता तो केवल दुखमय है।
वह मुक्तिमारग में कैसे हो सकती है?।।५५।।

मुक्ति अर मुक्तिमग दोनों ही सुखमय हैं।
अर भगवान आतमा भी आनन्दस्वभावी।।
अरे ज्ञान का पिण्ड और सुखकन्द आतमा।
अनन्त गुणों का गोडाउन भगवान आतमा।।५६।।

अरे त्रिकाली ध्रुव है यह भगवान आतमा।
असंख्यात परदेशी अनादि–अनन्त आतमा।।
इसके ही आश्रय से मुक्तिमार्ग पनपता।
इसका दर्शन–ज्ञान–चरित मुक्तिमारग है।।५७।।

दर्शन–ज्ञान–चरण की पूरणता मुक्ति है।
शान्त निराकुलभाव निरन्तर ही रहता है।।
सहजभाव ही मुक्ति का सच्चा स्वरूप है।
असहजता तो सदा अरे संसाररूप है।।५८।।

अरे अशुद्धि तो आस्रव है बन्धरूप है।
शुद्धि की उत्पत्ति को संवर कहते हैं।।
अर शुद्धि की वृद्धि तो निर्जरा तत्त्व है।
अर शुद्धि की पूरणता को मोक्ष कहा है।। ५९ ।।

आनन्द का रसकन्द ज्ञान का पिण्ड मोक्ष है।
अनन्त वीर्य का धनी चण्ड परचण्ड मोक्ष है।।
अरे अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड मोक्ष यह।
सादी फिर भी रहे अनन्तानन्त काल तक।। ६० ।।

यह सब होगा सहज एकदम सहज समझ लो।
मुक्ति का तो मार्ग एकदम सहज सरल है।।
जब तक तुम न हुये सहज तब तक ही समझो।
तब तक गोते खाते रहना भवसागर में।। ६१ ।।

भवसागर में गोते खाना इष्ट नहीं हो।
तो तुम सभी परिणमन को ही सहज समझलो।।
अरे आज तक कुछ भी असहज नहीं हुआ है।
जो कुछ होता सभी सहज ही तो होता है।। ६२ ।।

चौबीसों तीर्थंकर का यह कथन समझलो।
सौ इन्द्रों की उपस्थिति में कहा गया है।।
जिनवाणी में जगह–जगह पर यह फरमाया।
आँख खोलकर देखो तो सब जगह मिलेगा।।६३।।

काललब्धि के आने पर ही हाथ लगेगा।
और पाँच समवायों के बिन काम न होगा।।
एक बार तुम निर्विकल्प होकर के भाई!
सहजभाव से स्वयं समझ करके तो देखो।। ६४ ।।

मुक्तिमार्ग में आये तो भी बोझा लेकर।
क्रियाकाण्ड का बोझा माथे पर धारण कर।।
सारे जग की सभी समस्यायें ढो–ढोकर।
मरे जा रहे अरे निरन्तर चिन्तित होकर।। ६५ ।।

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

17 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 145 – सम्यग्दर्शन यत्नसाध्य है या सहजरूप है?

उत्तर – सम्यग्दर्शन यत्नसाध्य नहीं, सहजरूप है।

प्रश्न 146 – क्या निश्चय और व्यवहार सम्यग्दर्शन अलग–अलग व्यक्ति को हो सकते हैं? जैसे– रमेश को निश्चय सम्यग्दर्शन हो और सुरेश को व्यवहार सम्यग्दर्शन।

उत्तर – नहीं, यह दोनों सम्यग्दर्शन एक ही व्यक्ति को एक ही समय में होते हैं। धर्मात्मा जीव के आत्मश्रद्धान को निश्चय सम्यग्दर्शन और नवतत्त्व के श्रद्धान को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते हैं।

गाथा – 13

प्रश्न 147 – समयसार की मूल विषय–वस्तु क्या है?

उत्तर – भूतार्थनय से नवतत्त्वों में प्रकाशमान आत्मज्योति को खोजना ही समयसार की मूल विषय–वस्तु है।

प्रश्न 148 – भूतार्थनय का कार्य क्या है?

उत्तर – सर्वत्र आत्मज्योति को खोजना भूतार्थनय का कार्य है।

प्रश्न 149 – इस गाथा में सम्यगदर्शन किसे कहा है?

उत्तर – इस गाथा में भूतार्थनय से जाने गए नवतत्त्वों को सम्यग्दर्शन कहा है।

प्रश्न 150 – आत्मख्याति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – आत्मख्याति अर्थात् आत्मा की प्रसिद्धि। अपना आत्मा स्वंय को ही जाने, अनुभव करे; अपने में ही अपनापन स्थापित करे, अपने में ही जम जाय, रम जाय, समा जाय – यही सच्ची आत्मख्याति हैं।

प्रश्न 151 – नौ तत्त्वों के नाम बताइए।

उत्तर – जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष – ये नौ तत्त्व हैं।

प्रश्न 152 – इस गाथा में नव तत्त्वों को कितने भागों में बाँटा गया है? नाम बताइए।

उत्तर – इस गाथा में नव तत्त्वों को दो भागों में बाँटा गया है– भाव और द्रव्य। भाव–पुण्य, भाव–पाप, भाव–आस्रव, भाव–सवंर, भाव–निर्जरा, भाव–बंध और भाव–मोक्ष जीव हैं और जीव के ही विस्तार हैं। द्रव्य–पुण्य, द्रव्य–पाप, द्रव्य–आस्रव, द्रव्य–संवर, द्रव्य–निर्जरा, द्रव्य–बंध और द्रव्य–मोक्ष अजीव हैं, अजीव के ही विस्तार हैं।

प्रश्न 153 – संकल्प किसे कहते हैं?

उत्तर – द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म आदि पुद्गलद्रव्यों में अपनत्व स्थापित करने को संकल्प कहते हैं।

प्रश्न 154 – विकल्प किसे कहते हैं?

उत्तर – ज्ञेयों के भेद से ज्ञान में भेदों के ज्ञात होने को विकल्प कहते हैं।

प्रश्न 155 – सम्यग्दर्शन की प्राप्ति किसके आश्रय से होती हैं?

उत्तर – सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संकल्प–विकल्प रहित शुद्धनय के विषयभूत शुद्धात्मा के आश्रय से होती है।

गाथा–14

प्रश्न 156 – आत्मा कितने प्रकार से अनेकरूप दिखाई देता है?

उत्तर – आत्मा पाँच प्रकार से अनेकरूप दिखाई देता है–

1. अनादिकाल से कर्मपुद्गल के संबंध से बंधा हुआ कर्मपुद्गल के स्पर्श वाला दिखाई देता है।
2. कर्म के निमित्त से होने वाली नर–नारकादि पर्यायों में भिन्न–भिन्न स्वरूप से दिखाई देता है।
3. कर्म के निमित्त से होने वाले मोह–राग–द्वेष आदि परिणामों से सहित वह सुख–दुःख रूप दिखाई देता है।
4. वह दर्शन–ज्ञान आदि अनेक गुणों से विशेष रूप दिखाई देता है।
5. ज्ञानादिक पर्याय में हीनाधिकता होती है। पर्याय में हीनाधिकता होना– यह पर्याय स्वभाव है, इससे आत्मा नित्य, नियत, एकरूप दिखाई नहीं देता।

प्रश्न 157– इस गाथा में शुद्धरूप के विषयभूत आत्मा को कितने विशेषणों के माध्यम से समझाया गया है? नाम बताइए।

उत्तर – इस गाथा से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को पाँच विशेषणों से समझाया गया है अबद्धस्पृष्ट, अविशेष, अनन्य, नियत और असंयुक्त।

प्रश्न 158 – उक्त पाँच विशेषणों के माध्यम से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को किन–किन भावों से भिन्न बताया गया है?

उत्तर – इस गाथा में अबद्धस्पृष्ट विशेषण के माध्यम से पर और द्रव्यकर्म से भिन्न बताया है। अविशेष विशेषण से गुणभेद से भिन्न बताया है। अनन्य विशेषण से व्यंजन पर्याय से, देह से भिन्न बताया है। नियत विशेषण से अर्थपर्यायों से भिन्न बताया है। असंयुक्त विशेषण से भावकर्म रूप रागादि विकारी भावों से भिन्न बताया है। संक्षेप में कहें तो इन पाँच विशेषणों के माध्यम से आत्मा को द्रव्यकर्म, भावकर्म और शरीर से भिन्न, पर्यायों से पार, सर्वपर्यायों में एकाकार और गुणभेद से भिन्न, प्रदेशभेद से भिन्न, असंख्यात प्रदेशी, एक बताया गया है।

(क्रमशः)

20वाँ वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

खनियांधाना : श्री समयसार कहान सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर ट्रस्ट द्वारा श्री नन्दीश्वर जिनमन्दिर की 20वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में पंच-दिवसीय श्री समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती क्रांतिदेवी, देवेन्द्रकुमारजी, राकेशकुमारजी, महावीरकुमारजी कठरया परिवार खनियांधाना थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना मंगल प्रेरणा से सम्पन्न हुआ। मुख्य विधानाचार्य एवं वक्ता के रूप में बाल ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर के अतिरिक्त ब्र. रविभैया ललितपुर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित मुकेशजी जैन कोठादार, पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई का समागम प्राप्त हुआ। समस्त आयोजन का संयोजन व संचालन पण्डित दीपकजी शास्त्री 'ध्रुव' ने किया।

त्रि-दिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न

भिण्ड : यहाँ 26 से 28 फरवरी 2022 तक श्री दिगम्बर जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में त्रि-दिवसीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटनकर्ता श्री धीरजजी जैन सी.ए. दिल्ली रहे।

कार्यक्रम में जिनेन्द्र प्रक्षाल, पूजन, भक्ति के अतिरिक्त बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' के समयसार विषय पर दोनों समय प्रवचन एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री वीरसेनजी सर्राफ, पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री एवं कौशल किशोरजी जैन के निर्देशन एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री के संचालन में सम्पन्न हुआ।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन
पारस चैनल सहित अब आदिनाथ चैनल पर भी...

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2022

प्रति,